रात्रिक्लास 9/11/68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

बच्चे जानते हैं दुनिया में है ही भक्ति मार्ग। ज्ञान का सागर तो बाप ही है। वह है भक्ति रात। दिन है सतयुग। रात और दिन के बीच में बाप आकर ज्ञान देते हैं। तो तुम दिन में चले जाते हो। अभी तुम हो गुप्त। इनकॉगनिटो की शक्ति सेना। तुम लड़ाई के मैदान में हो। यह है भी गीता। गीता में ही राजयोग है। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। कृष्ण का नाम डालने से भारत कंगाल हो गया है। फिर सच्ची गीता से तुम सिरताज बनते हो। तुम समझाते हो कृष्ण भगवान नहीं है। सारा मदार है गीता पर। वह है मनुष्यों की सुनाई हुई गीता। म्युज़ियम आदि में जब समझाते हैं तो यह समझाना है। यह गीता का एपिसोड है। सिर्फ भगवान किसको कहा जाये, यह भारतवासी नहीं जानते। कृष्ण भगवानुवाच कह सारी गीता खण्डन कर दी है। गीता पढ़ते-2 राजाई थोड़े ही प्राप्त होती है। बाप विश्व में शांति स्थापन कर रहे हैं। विश्व में शांति हुई थी ना। इसमें प्युरिटी ज़रूर चाहिए। इस पवित्रता की बात पर झगड़ा होता है। पवित्रता बिगर कैरेक्टर्स सुधर नहीं सकती। वह पतित कहलाते, वह पावन कहलाते। अभी सभी पतित हैं, तो भारतवासी में कैरेक्टर्स है नहीं। भ्रष्टाचारी हैं। पावन को श्रेष्ठाचारी कहा जाता है। भारत को ऐसा हम श्रेष्ठाचारी बना रहे हैं। इनके राज्य में ही वर्ल्ड पीस थी। सभी ब्रदर्स का बाप ही विश्व में शांति स्थापन करते हैं। बेहद के बाप की महिमा करने से खुश होंगे। वही ऊँच ते ऊँच भगवान है। भगवान कहते हैं मैं साधुओं का भी उद्धार करता हूँ। तो पतित ठहरे ना। पावन बनाने वाला एक ही बाप है। किसको समझाने की भी बुद्धि चाहिए। बहुत थोड़े हैं जो समझा सकते हैं। कहते हैं हम बोल नहीं सकते। हरेक की अपनी तकदीर है। कोशिश करनी चाहिए। बाप जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। यह तुम्हारी तकदीर की बात है। मंज़िल है ना। याद न रहने कारण पतित के पतित ही रह जाते हैं। याद की यात्रा में रह नहीं सकते। जो शांत रहते हैं वह बाप की याद में रहते होंगे। आगे चल तुमको कहेंगे मूवी में बात करो। आवाज़ बंद। आवाज़ से भी बोलना न चाहिए। बहुत आ(स्ते) बोलने से शांति रहती है। नहीं तो जैसे कि आपस में लड़ते हैं। सभी को अलफ और बे बताना है। बेहद के बाप को याद करो तो पाप कट जायें। शिवजयंती भारत में ही होती है। शिव ने क्या आकर किया, कुछ भी पता नहीं। कृष्ण तो नई दुनिया स्थापन कर न सके। कृष्ण ने थोड़े ही नई दुनिया रची है। वह तो बाप रचते हैं। तो यह सभी बातें समझकर समझाना होता है। याद की यात्रा से जन्म-जन्मांतर के विकर्मों को भस्म करना है। वह हिसाब तो चुक्तू कर दें। अभी तुम समझते हो हम आसुरी सम्प्र॰ थे। अभी दैवी सम्प्रदाय बन रहे हैं। ओम। पाइंट्स :– सतगुरुवार तो तुम बच्चों का रोज़ है। रोज़ तुमको ज्ञान का सागर पढ़ाते हैं। वृक्षपति भगवान को कहा जाता है। ज्ञान भी भगवान में है। वही सुख का सागर, ज्ञान का सागर..... है। सतयुग में है शांति। आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। वह है ज्ञान का सागर। यह है अज्ञान का सागर। एक/दो पर काम-कटारी चलाते रहते हैं। आधा कल्प है रामराज्य, आधा कल्प है रावण राज्य। सुख और दुःख का खेल है। अभी बाप कहते हैं चलो सुखधाम और पुरुषार्थ कर ऊँच पद लो। यहाँ तुम आये हो नर से ना॰ बनने; परंतु माया भी कम नहीं है। अच्छे-2 महारथियों से माया ऐसी विकर्म कराती है जो बात मत पूछो। बाप से भी छिपाते हैं। बाप को न सुनाने से वह फिर सौण पर(सौणा पड़) जाता है। चढ़ने बदली और ही गिर पड़ते हैं। दिल में समझते ज़रूर हैं हम देहअभिमान में आकर विकर्म कर बैठते हैं। बाबा कहते हैं खबरदार रहो। ऐसे मत समझो बाबा को पता नहीं पड़ता। बाबा को सभी मालूम पड़ जाता है। विवेक से काम लेते हैं। लड़ाई के मैदान में है ना। अच्छे-2 कैप्टन, कमाण्डर भी मर जाते हैं। माया से धोखा खा लेते हैं। कहाँ-2 चोट खा लेते। (अ)स्पताल जाने जाने लायक बनते हैं। माया बड़ी जबरदस्त है। लज्जा के मारे बहुत बाबा को लिखते नहीं। नहीं तो कायदा है जो भी पाप किये हैं वह लिखकर भेजें तो कम हो जावेगा; परंतु सुनाते नहीं हैं। माया पाप कराती ही रहती है। दिल अंदर ज़रूर खाती होगी; परंतु देहअभिमान है हम बहुत अच्छा समझाते हैं। हम परिपूर्ण हैं। बाप तो सभी को समझावेंगे ना। मुरली में ही समझानी देते रहेंगे। बाप देखे न देखे; परंतु माया का थप्पड़ खाकर अवस्था खराब कर देते हैं। ओ।